एकलव्य

बच्चों के खेलगीत

बैठ घोड़ा पानी पी

संकलन
मनोज साहू 'निडर'

चित्र
शुभम लखेरा

बच्चों के खेलगीत

बैठ घोड़ा पानी पी

संकलन

मनोज साहू 'निडर'

चित्र

शुभम लखेरा

एकलव्य

बैठ घोड़ा पानी पी

BAITH GHODA PANI PEE

बच्चों के खेलगीत

संकलन: मनोज साहू 'निडर'
चित्र: शुभम लखेरा

पहला संस्करण: सितम्बर 2006 (3000 प्रतियाँ)
पहला पुनर्मुद्रण: अक्टूबर 2008 (15,000 प्रतियाँ)
दूसरा पुनर्मुद्रण: नवम्बर 2008 (30,000 प्रतियाँ)
तीसरा पुनर्मुद्रण: नवम्बर 2008 (30,000 प्रतियाँ)
चौथा पुनर्मुद्रण: दिसम्बर 2008 (60,000 प्रतियाँ)
पाँचवाँ पुनर्मुद्रण: दिसम्बर 2008 (20,000 प्रतियाँ)
छठवाँ पुनर्मुद्रण: सितम्बर 2022 (2500 प्रतियाँ)
सातवाँ पुनर्मुद्रण: अक्टूबर 2022 (3000 प्रतियाँ)
आठवाँ पुनर्मुद्रण: दिसम्बर 2023 (3000 प्रतियाँ)
कागज़: 100 gsm मैपलिथो व 220 gsm एफबी बोर्ड (कवर)
ISBN: 978-93-94552-05-0
मूल्य: ₹ 80.00

प्रकाशक: एकलव्य फाउंडेशन
जमनालाल बजाज परिसर
जाटखेड़ी, भोपाल - 462 026 (मप्र)
फोन: +91 755 297 7770-71-72
वेबसाइट: www.eklavya.in ईमेल: books@eklavya.in

मुद्रक: आदर्श प्रा लि, भोपाल; फोन: +91 755 255 5442

अपनी बात

यह संकलन ग्रामीण अंचल में बिखरे हुए बालगीतों व खेलगीतों को बटोरने के एक छोटे-से प्रयास का फल है। इससे पहले हमने इसी प्रयास पर आधारित एक अन्य किताब अक्कड़-बक्कड़ भी प्रकाशित की है। यह प्रयास इसलिए है, ताकि आज की भागमभाग ज़िन्दगी और आधुनिकता के प्रभाव से कमरे में कैद होते बचपन के बीच माटी की गन्ध में रचे-बसे ये पारम्परिक गीत कहीं गुम न हो जाएँ। इनमें अधिकतर गीत ऐसे हैं जिन्हें हम पीढ़ी दर पीढ़ी गाते और सुनते चले आ रहे हैं। कुछ ऐसे गीत भी हैं जो वर्तमान से प्रभावित हुए हैं। ये बेतुके, ऊटपटांग और अर्थहीन गीत बच्चों की कल्पनाशीलता और रचनात्मकता का नमूना तो हैं ही, साथ ही बच्चों में भाषाई कौशल विकसित करने के सशक्त माध्यम भी हैं। यदि इन गीतों को बाल अभिव्यक्ति की बुनियाद कहा जाए तो अतिशयोक्ति न होगी।

हमारे देश में बच्चों के लिए बड़ों द्वारा बहुत कुछ लिखा जा रहा है। बाल साहित्य में अनेक किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं और यह क्रम निरन्तर जारी है। पता नहीं यहाँ संग्रहित रचनाएँ बालगीतों के मानदण्डों को पूरा करती भी हैं या नहीं। लेकिन इतना तय है कि तुकबन्दी सरीखी ये रचनाएँ बच्चों को बहुत पसन्द हैं। इनमें वह सबकुछ है जो उन्हें अच्छा लगता है। इनमें से अधिकांश गीतों को बच्चों ने खेलते-कूदते अपने लिए स्वयं रचा भी है। इस संग्रह में मेरा अपना कुछ भी नहीं है। जो कुछ भी है इन बच्चों का ही है, जिसे समेटकर मैं उन्हें ही सौंप रहा हूँ।

उम्मीद है यह संकलन बच्चों के साथ-साथ बड़ों को भी पसन्द आएगा।

मनोज साहू 'निडर'

गुरुजी

गुरुजी नमस्ते,
पान खाओ सस्ते।
पान में गिरी इल्ली,
हम जाएँगे दिल्ली।
दिल्ली में आलू सस्ते,
गुरुजी नमस्ते।

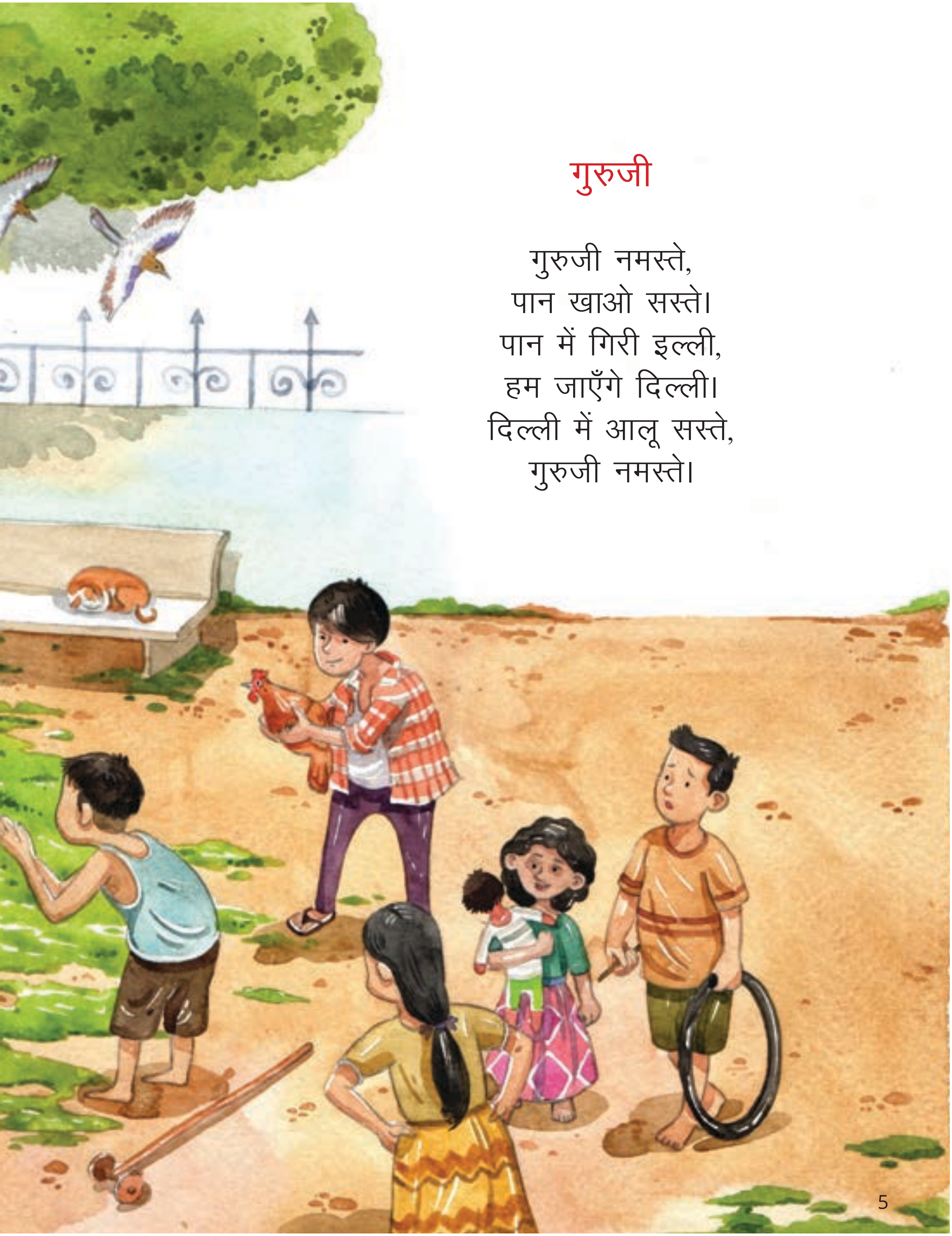

पट्टी

कुएँ का पानी
कुएँ में जाए।
मेरी पट्टी सूख जाए।
नदी का पानी
नदी में जाए।
मेरी पट्टी सूख जाए।

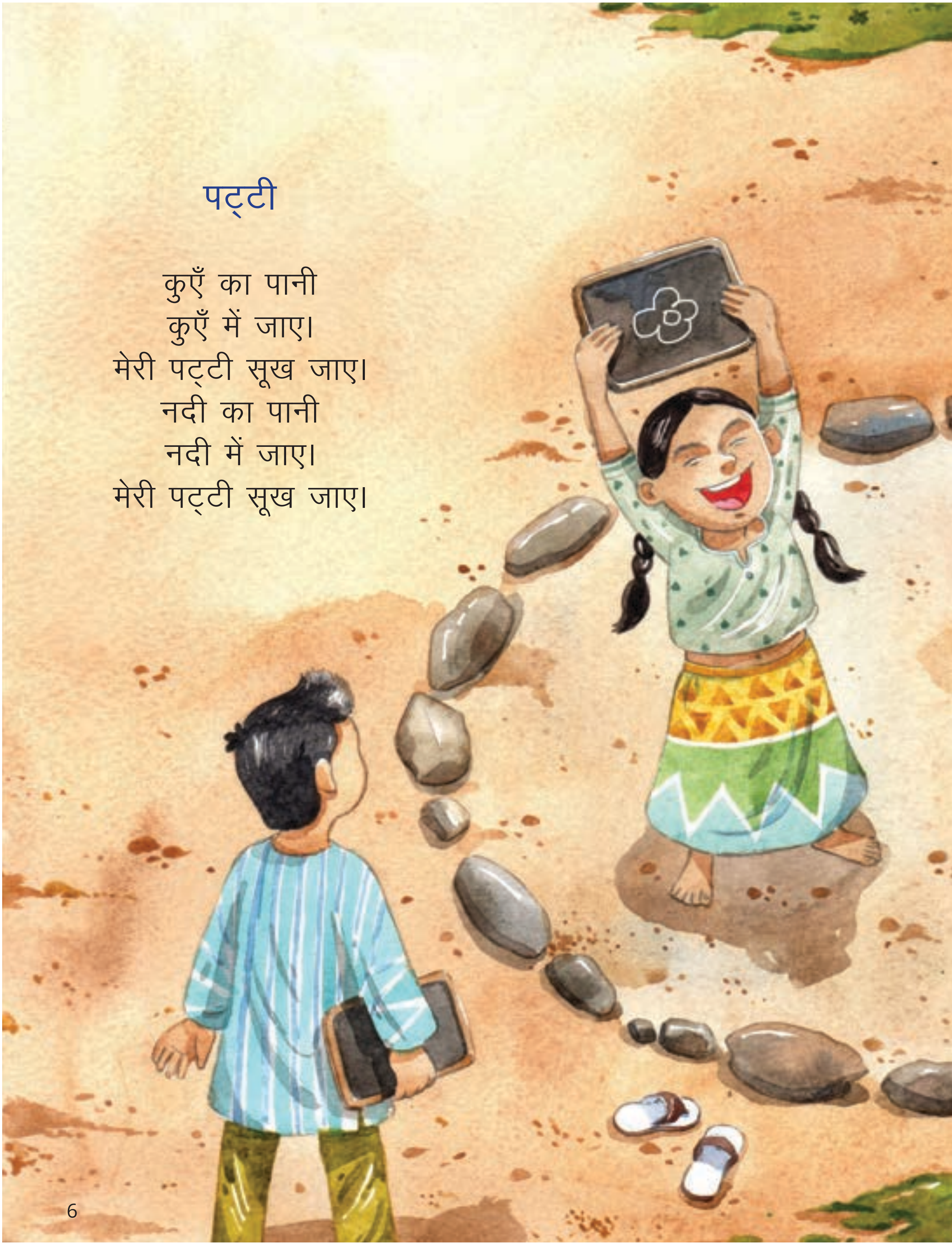

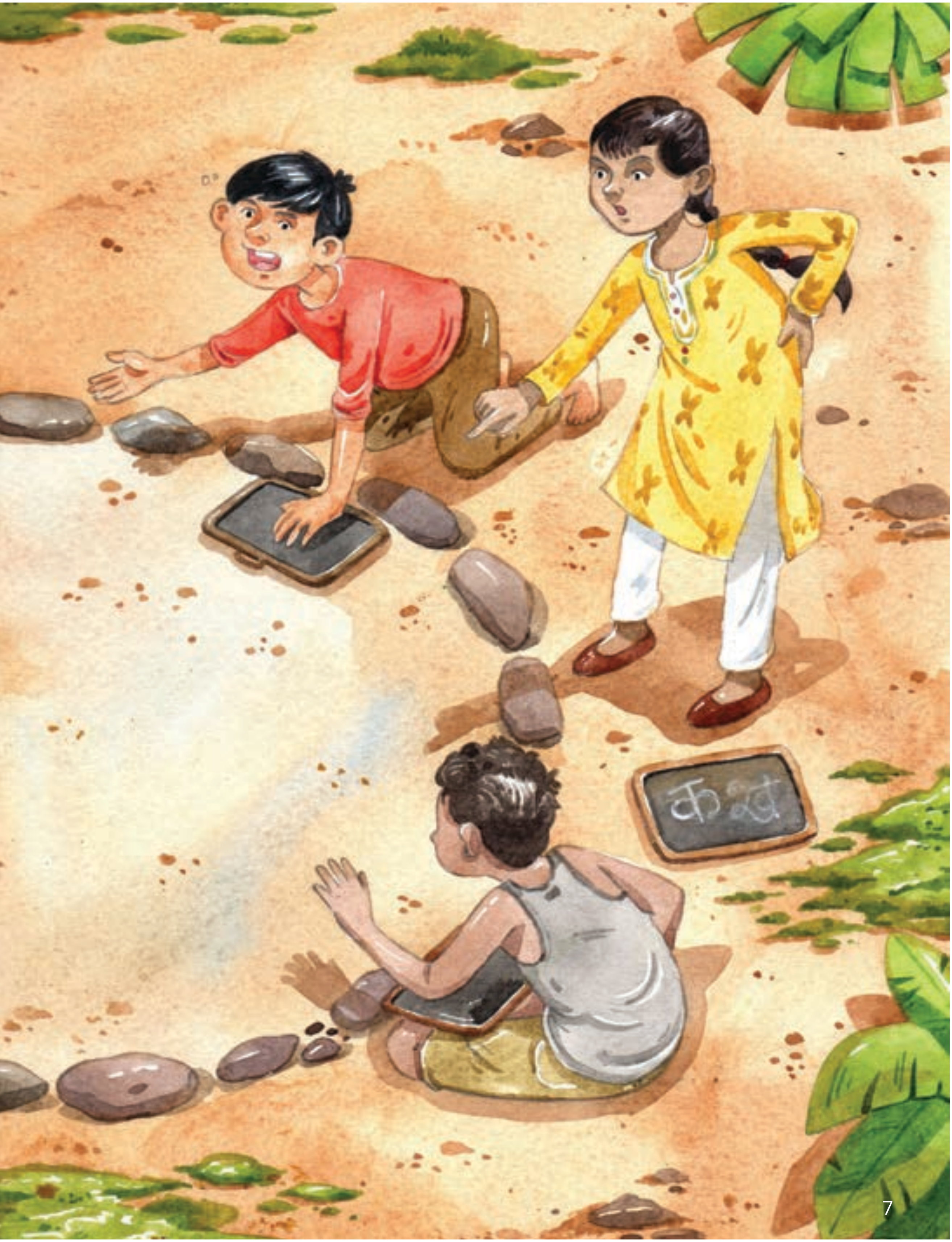

भात का पहाड़ा

भात एकम भात,
भात दूनी दाल।
भात तिया तरकारी,
भात चौके चटनी।
भात पंजे पापड़,
भात छक्के छाछ।
भात सत्ते सतुआ,
भात अट्ठे अचार।
भात नमे नमकीन,
भात दहाई दही।
तब भोजन सही।

आम-चूली

आम चूली, छप्पन छुरी,
गरम मसाला, पानी पुरी।
दस पत्ते तोड़े,
एक पत्ता कच्चा।
हिरण का बच्चा।
हिरण बैठी रेल में,
रेल बोली छुक-छुक।
हमने खाए बिस्कुट।
बिस्कुट थे खराब।
हमने पी शराब।
शराब में मछली,
मछली में काँटा।
तेरा मेरा चाँटा।

*किताब की कविताओं में आपको कुछ ऐसी बातों का ज़िक्र मिल सकता है जो आपके नैतिक मूल्यों से मेल न खाती हों। फिर भी हमने बिना किसी बदलाव के इन गीतों को इस किताब में शामिल किया है। ये कई स्थानीय इलाकों के लोकप्रिय गीत हैं जिन्हें बच्चे खेल-खेल में गाते रहते हैं। हम स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि ऐसा करके हम बच्चों में इन व्यवहारों को बढ़ावा नहीं दे रहे हैं।

भूरी भैंस

भूरी भैंस मदन पड़िया,
चिकी जमाई नौ हड़िया।
चिकी कहाँ गई?
बिल्ली ने पी गई।
बिल्ली कहाँ गई?
बिठा में घुस गई।
बिठा कहाँ गओ?
राख हो गओ।
राख कहाँ गई?
नदी में बह गई।
नदी कहाँ गई?
डूण्डा बैल पी गओ।

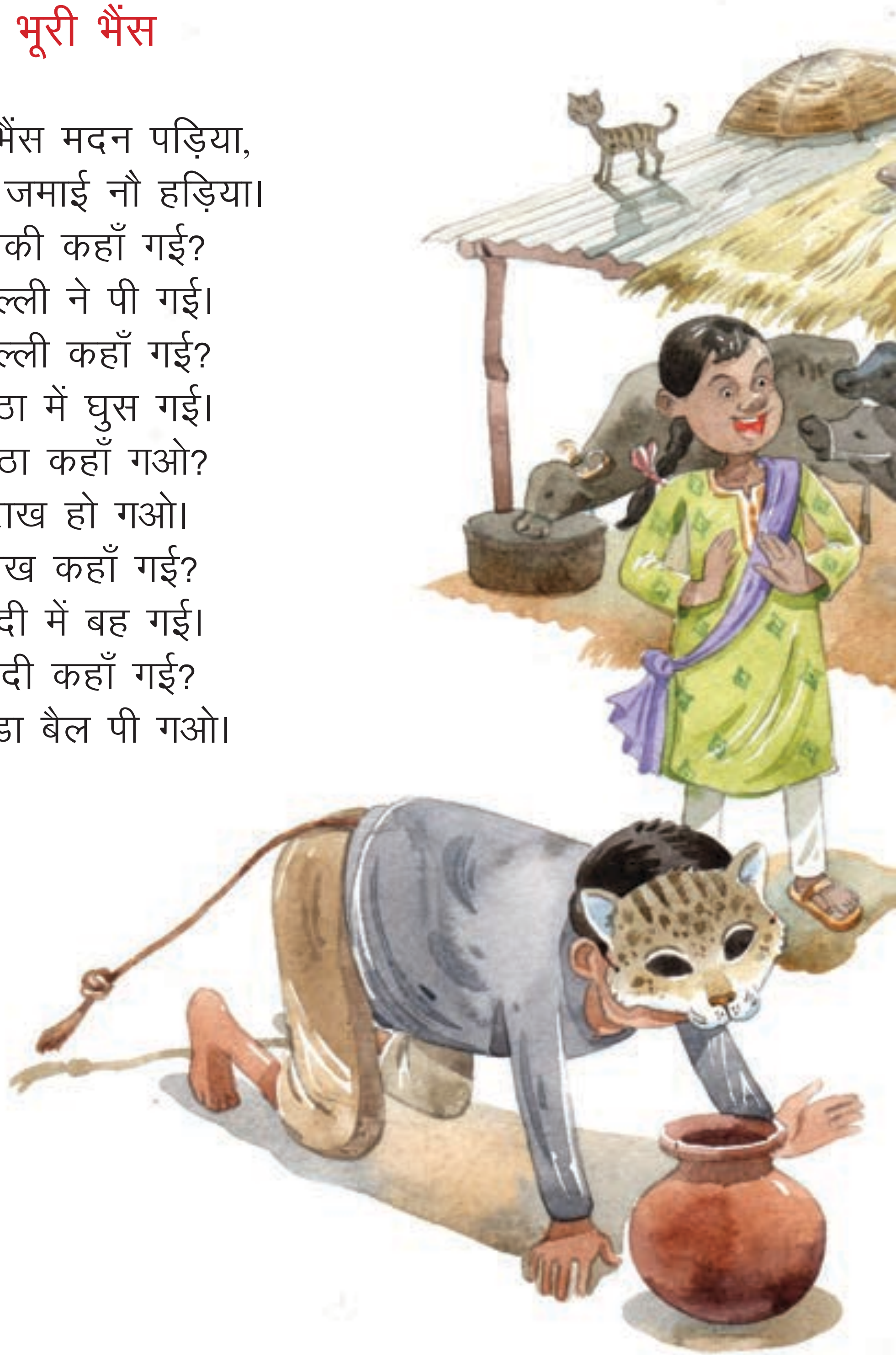

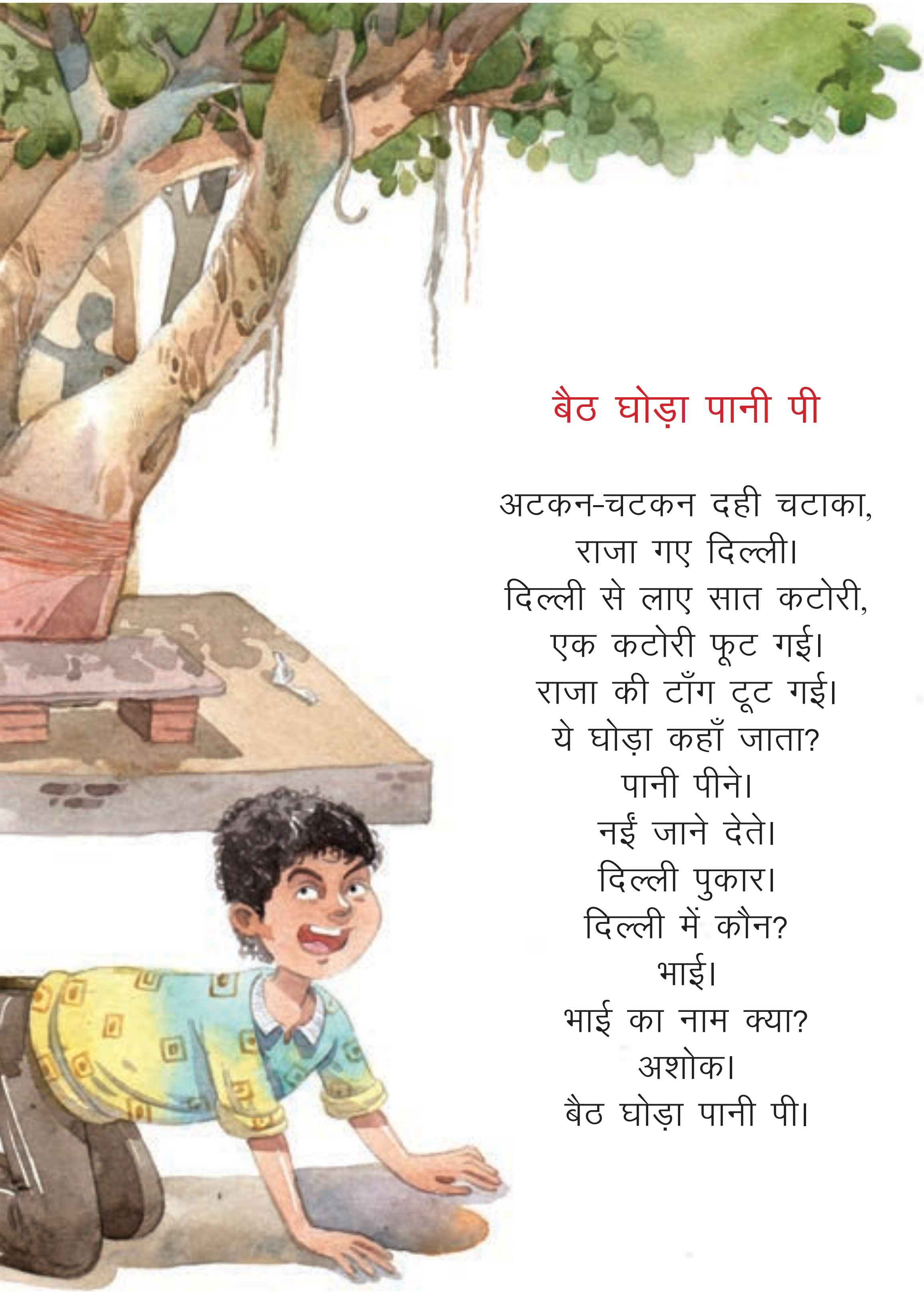

बैठ घोड़ा पानी पी

अटकन-चटकन दही चटाका,
राजा गए दिल्ली।
दिल्ली से लाए सात कटोरी,
एक कटोरी फूट गई।
राजा की टाँग टूट गई।
ये घोड़ा कहाँ जाता?
पानी पीने।
नईं जाने देते।
दिल्ली पुकार।
दिल्ली में कौन?
भाई।
भाई का नाम क्या?
अशोक।
बैठ घोड़ा पानी पी।

मम्मी

मम्मी-मम्मी भूख लगी,
खा ले बेटा मूँगफली।
मूँगफली में दाना नहीं,
हम तुम्हारे नाना नहीं।
नाना गए दिल्ली,
दिल्ली से लाए बिल्ली।
बिल्ली ने मारा पंजा,
चायवाला गंजा।

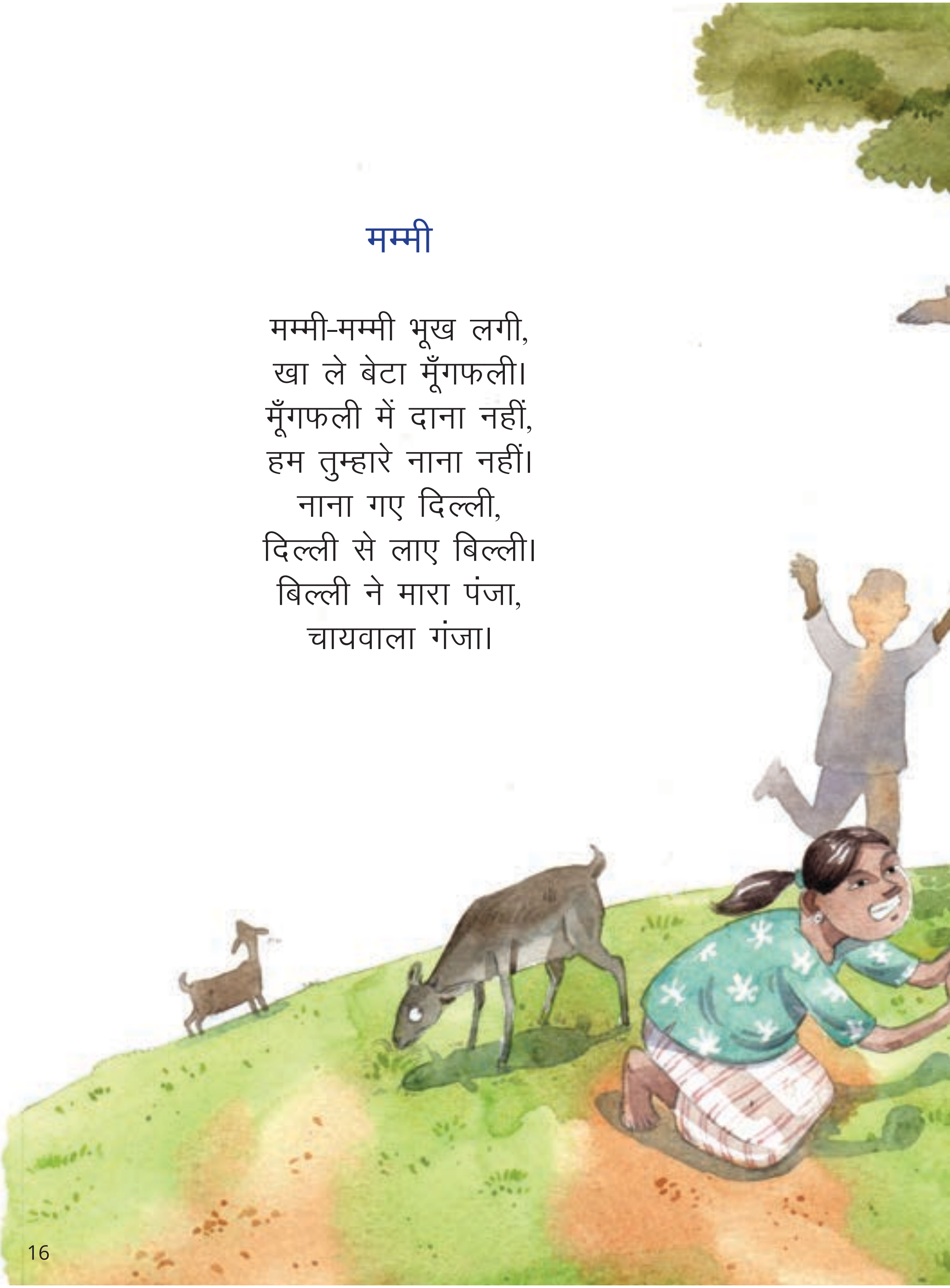

मैडमजी

मैडम-मैडम छुट्टी दो।
मम्मी को बुखार है,
घोड़ा तैयार है।
घोड़े की टाँग टूटी,
मल्हम लगाएँगे।
मल्हम पे मक्खी बैठी,
चादर ओढ़ाएँगे।
चादर का कोना फटा,
दर्ज़ी बुलाएँगे।
दर्ज़ी की सूजी टूटी,
लोहार बुलाएँगे।
लोहार की टाँग टूटी,
डॉक्टर बुलाएँगे।
डॉक्टर की टोपी उड़ी,
ताली बजाएँगे।

CLASS ROOM
1

चन्दा मामा

चन्दा मामा दूर के,
पुड़ी पकाओ पूर के।
आप खाओ थाली में,
मुन्ने को दो प्याली में।
प्याली गई टूट,
मुन्ना गया रूठ।
चन्दा के घर जाएँगे,
मुन्ने को मनाएँगे।

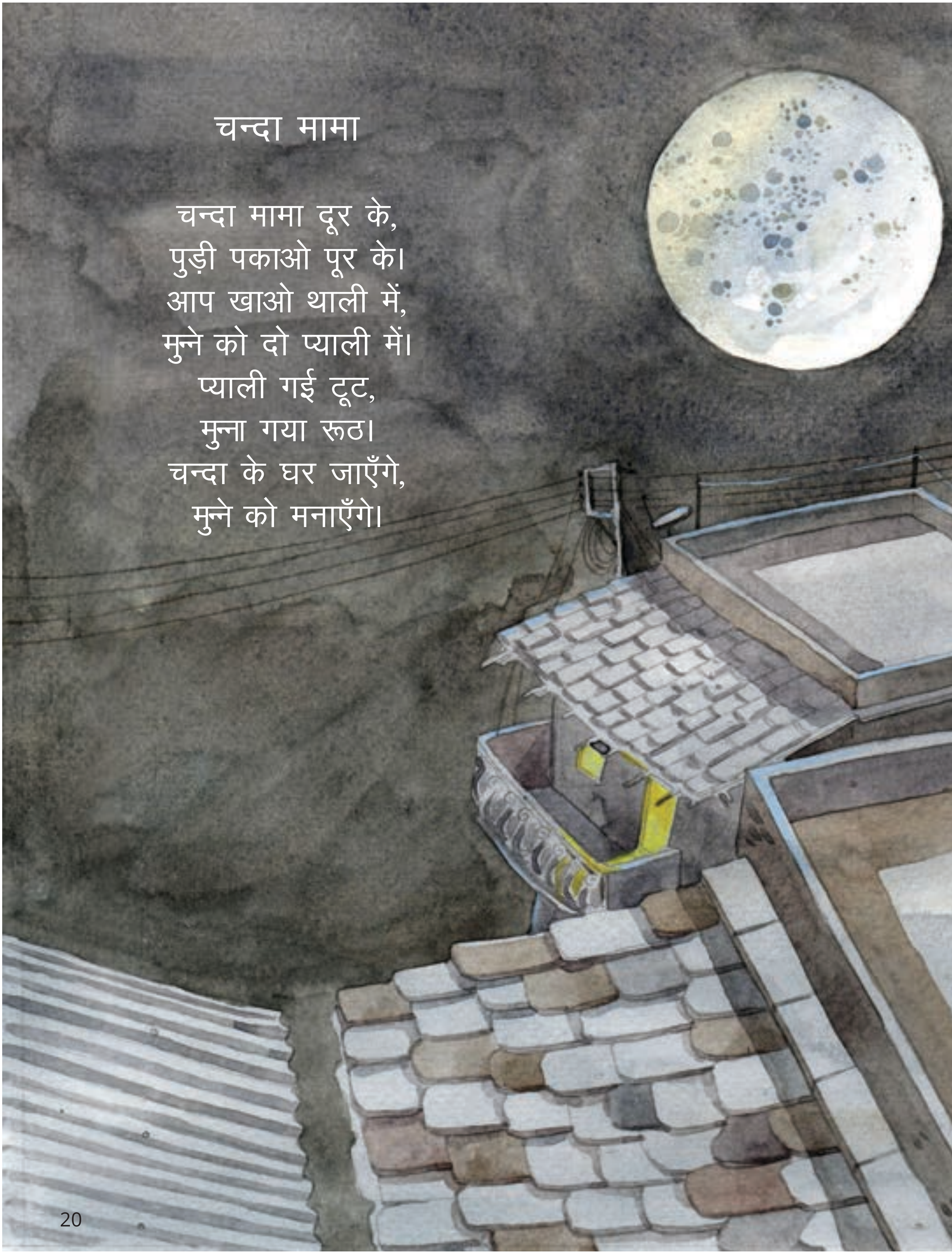

BOOK
BOOK

कट्टी

अट्टी बट्टी
नोन चबट्टी
बारह दिन की कट्टी।
कट्टी में जो
हमसे बोले
उसको मारो
दो सण्टी।

अद्दक-बद्दक

अद्दक-बद्दक चम्पा,
उसमें लगा घण्टा।
बारह बजे की छुट्टी में
बारह मिट्ठू बैठे थे।
एक मिट्ठू कच्चा,
वही रंग का पक्का।

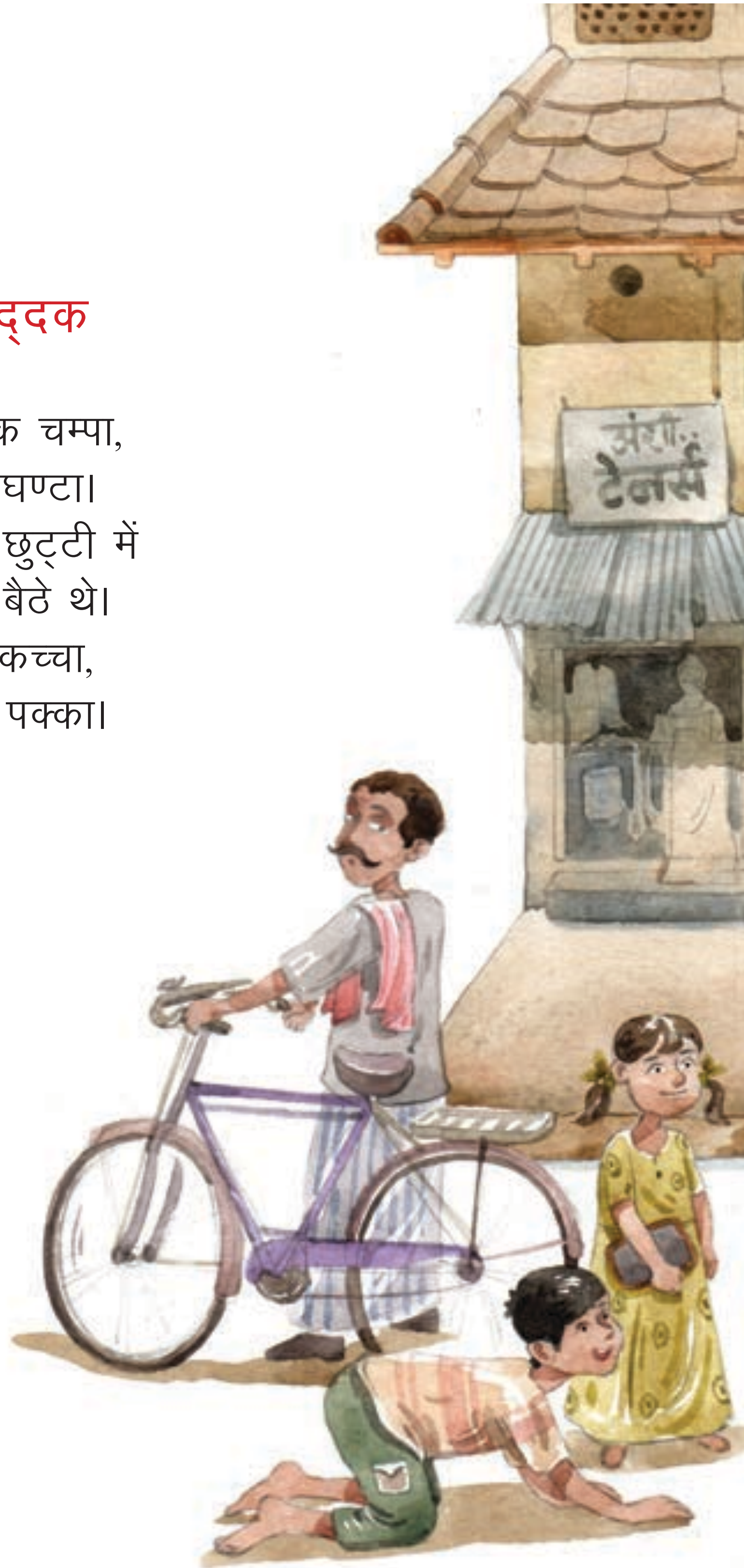

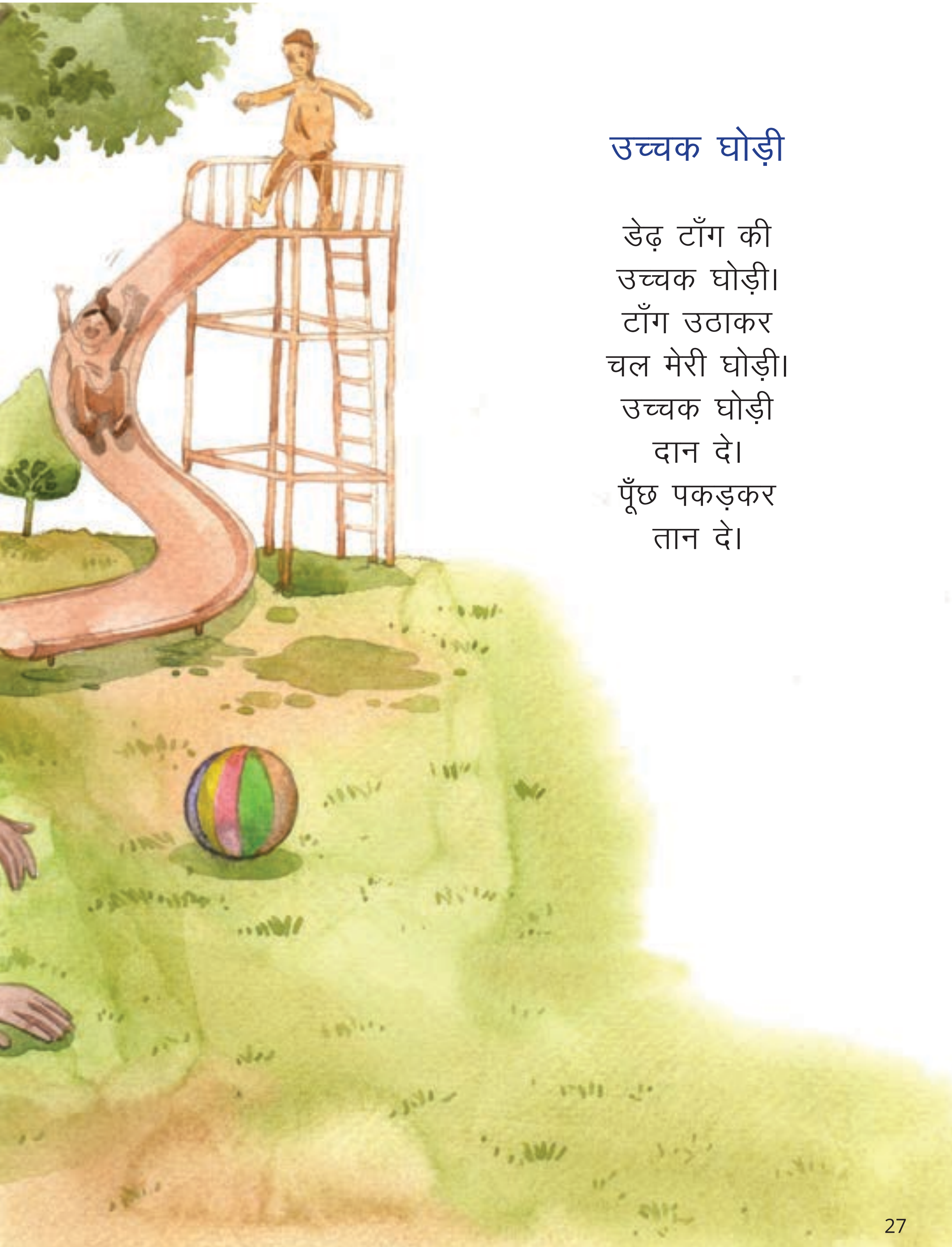

उच्चक घोड़ी

डेढ़ टाँग की
उच्चक घोड़ी।
टाँग उठाकर
चल मेरी घोड़ी।
उच्चक घोड़ी
दान दे।
पूँछ पकड़कर
तान दे।

तितली

तितली उड़ी
बस पे चढ़ी
सीट न मिली
रोने लगी
ड्राइवर ने कहा
आजा मेरे पास
तितली कहे
मैं तो चली आकाश।

8 9

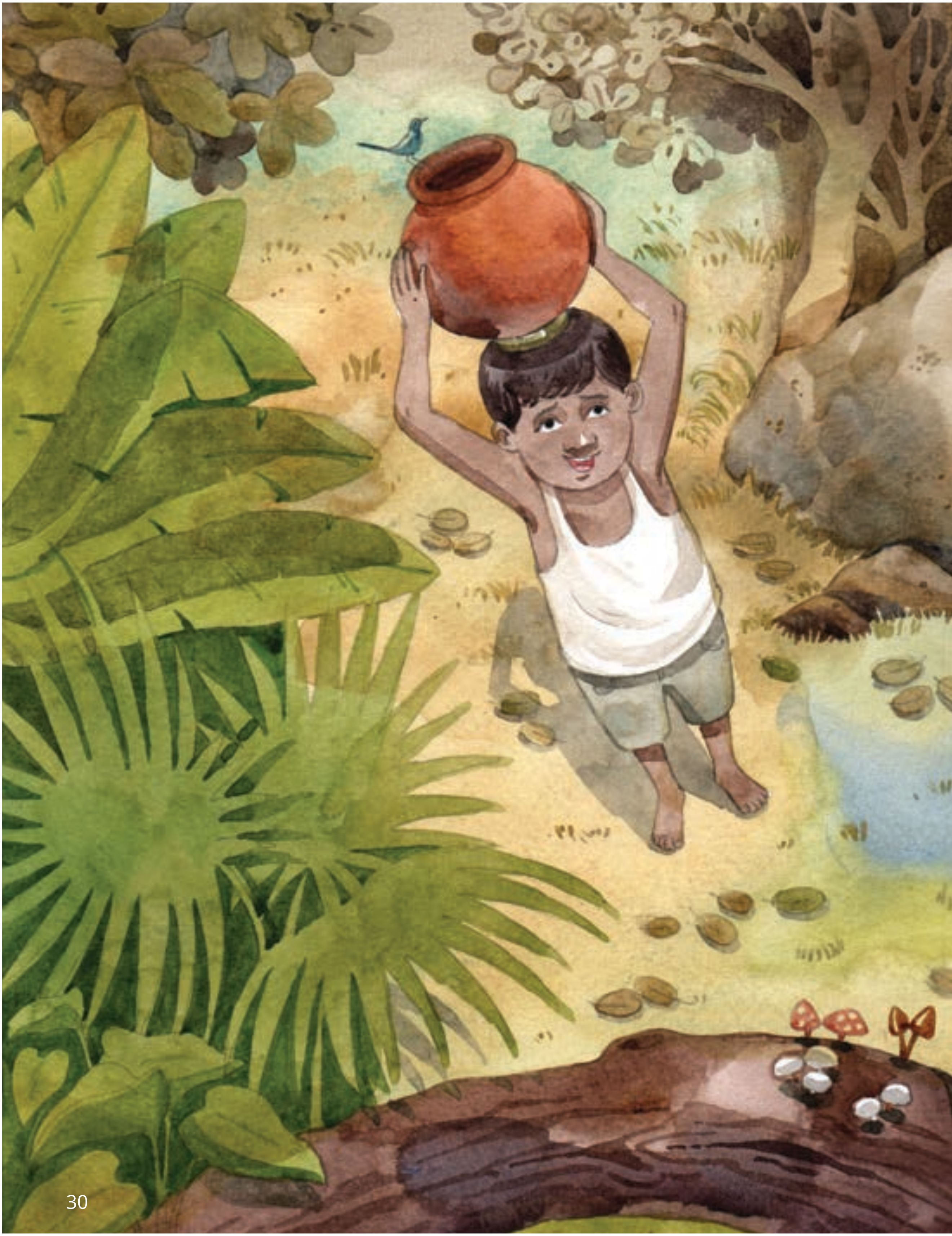

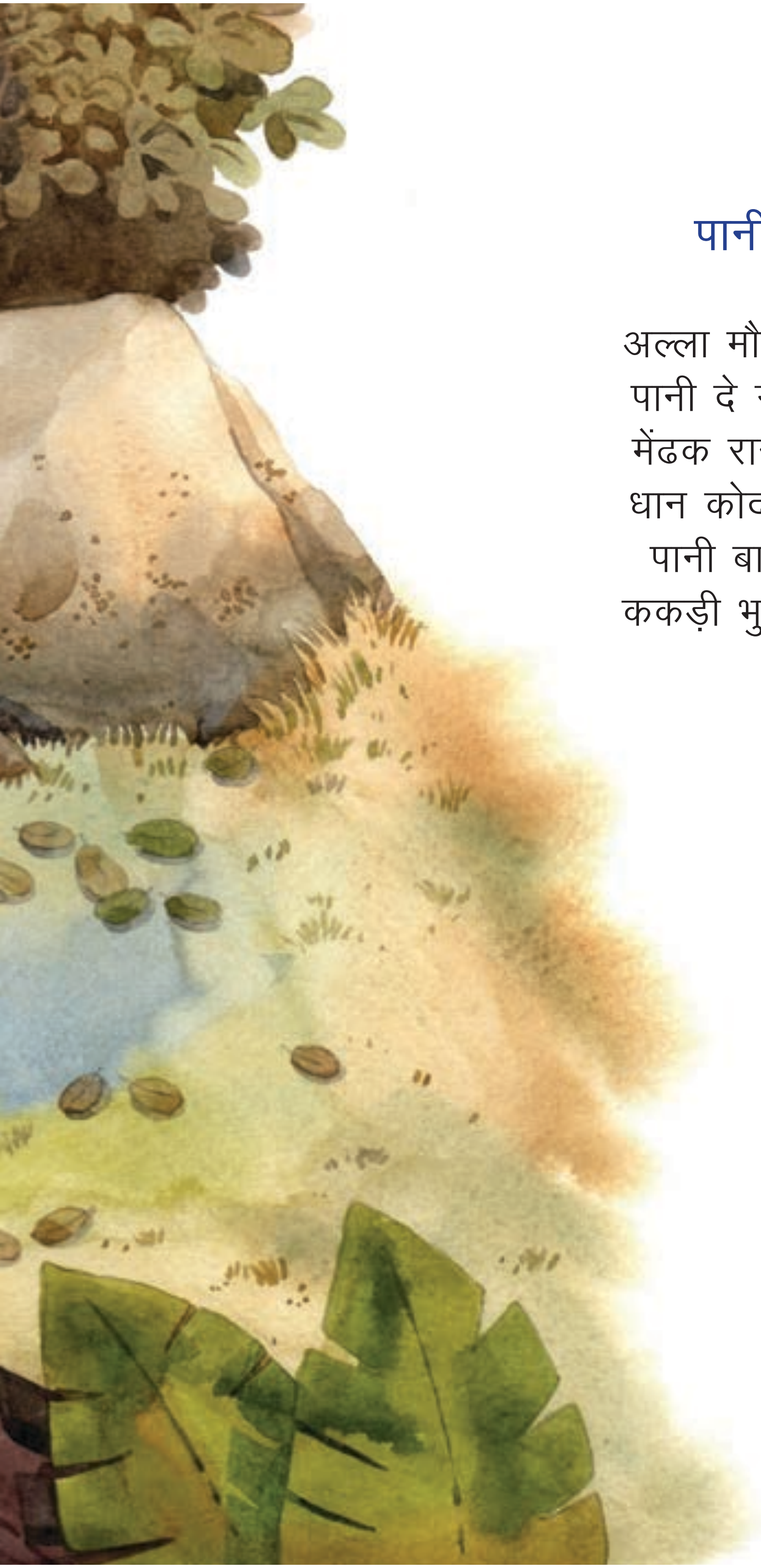

पानी बाबा

अल्ला मौला पानी दे,
पानी दे गुड़धानी दे।
मेंढक रानी पानी दे,
धान कोदों पकने दे।
पानी बाबा अइयो,
ककड़ी भुट्टा लइयो।

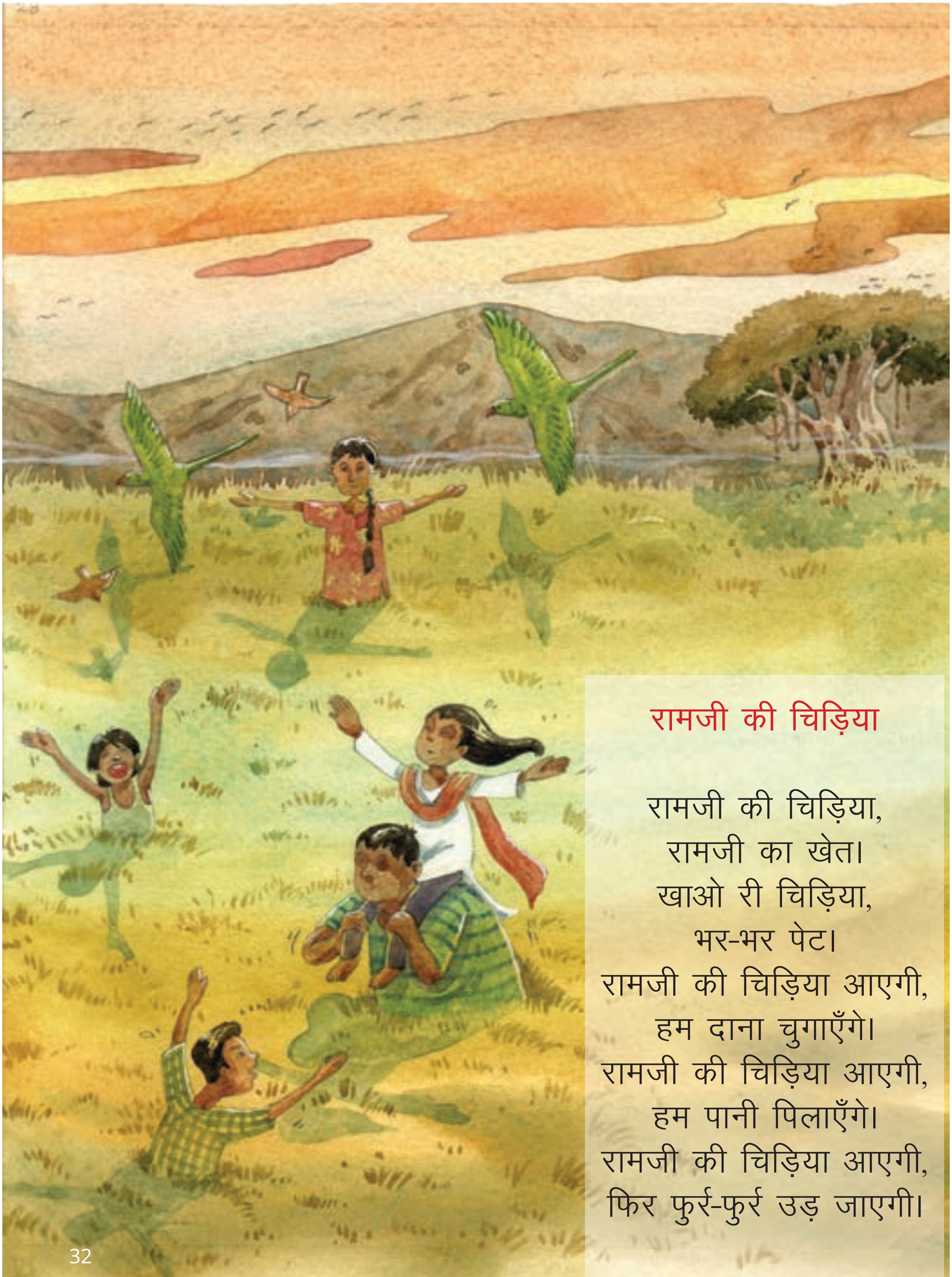

रामजी की चिड़िया

रामजी की चिड़िया,
रामजी का खेत।
खाओ री चिड़िया,
भर-भर पेट।
रामजी की चिड़िया आएगी,
हम दाना चुगाएँगे।
रामजी की चिड़िया आएगी,
हम पानी पिलाएँगे।
रामजी की चिड़िया आएगी,
फिर फुर्र-फुर्र उड़ जाएगी।

मनोज साहू 'निडर'

मनोज साहू 'निडर' युवा शिक्षक व रचनाकार हैं। शासकीय माध्यमिक विद्यालय पौजरा खुर्द में पढ़ाते हैं। गतिविधि आधारित शिक्षण व लोक साहित्य में गहरी रुचि रखते हैं।

*अक्कड़-बक्कड़, एक दो दस, खेलो गणित, ढोंगी लड़ैया, अहाड़ गओ पहाड़ ग*ओ उनकी एकलव्य से प्रकाशित किताबें हैं।

शुभम लखेरा

शुभम लखेरा मध्य प्रदेश के एक छोटे शहर चन्देरी से हैं। उन्होंने गवर्नमेंट फाइन आर्ट कॉलेज, ग्वालियर से पेंटिंग में ग्रेजुएशन किया है। रियाज़ एकेडमी, भोपाल से एक साल का इलस्ट्रेशन कोर्स भी किया है। वह पिछले पाँच सालों से बाल सहित्य के क्षेत्र में काम कर रहे हैं। वह चकमक, प्लूटो, साइकिल, पाठशाला, संदर्भ, फिरकी बाल पत्रिकाओं के लिए काम कर चुके हैं। उन्होंने डकबिल, तूलिका बुक्स, चाइल्ड फंड इंडिया, एनसीईआरटी, नवनीत बुक, एकलव्य, एलएलएफ और कई अन्य प्रकाशकों के साथ काम किया है।

भाषा शिक्षण में खेलगीतों की उपयोगिता

भाषा केवल एक-दूसरे से अपनी बात कहने का माध्यम ही नहीं है। उसकी मदद से बच्चे एक कल्पनाशील व कल्पनातीत दुनिया का निर्माण कर सकते हैं; ध्वनि, श्रुति और लय के साथ मिलकर अद्‌भुत व मनोरंजक इमारतें खड़ी कर सकते हैं। बालगीत व खेलगीत भाषा की इस ताकत और बच्चों की सृजनशीलता का परिचय देते हैं, और भाषा के ऐसे लचीले व रूढ़िध्वंसी उपयोग को प्रेरित करते हैं।

खेलगीतों का एक सीमित उपयोग और हो सकता है। पढ़ना सिखाने के लिए। चूँकि बच्चे इन गीतों को पहले से ही जानते हैं या अपने माहौल में पाते हैं, उन्हें लिपि में देखकर पढ़ना उनके लिए ज़्यादा आसान है और मज़ेदार भी। अपने बच्चों को इन गीतों के हर शब्द पर उँगली रखकर पढ़कर सुनाएँ और साथ दिए गए चित्रों पर भी उनसे बात करें। बाकी उन पर छोड़ दें!

मूल्य: ₹ 80.00

एकलव्य

9 789394 552050